



लोकविज्ञान

विज्ञान समिति, उदयपुर

मार्च - 2016

हमारी अंतःस्रावी ग्रंथियाँ (Endocrine glands)

हमारे शरीर में होने वाली कई जैविक क्रियाएं ग्रंथियों से प्रभावित रहती हैं। ये ग्रंथियां दो प्रकार की होती हैं - बाह्यस्रावी तथा अंतःस्रावी ग्रंथियां। बाह्यस्रावी ग्रंथियाँ अपने स्रवन (Secretion) को विभिन्न अंगों तक वाहिनियों द्वारा पहुंचाती हैं जैसे स्वेद ग्रंथि, बालों में उपस्थित तेल ग्रंथि, मुंह में श्लेष्मा ग्रंथि व पाचन ग्रंथि। वे स्रावी ग्रंथियाँ जो अपने स्राव को सीधे रक्त में विसरित करती हैं उन्हें अंतःस्रावी ग्रंथियाँ कहते हैं। अतः ये ग्रंथियाँ वाहिनिविहीन होती हैं। पीयूष ग्रंथि, अवटु ग्रंथि, परावटु ग्रंथि, अधिवृक्क ग्रंथि, पीनियल ग्रंथि, थाइमस ग्रंथि अंतःस्रावी ग्रंथियाँ कहलाती हैं। इनके अलावा वृषण, अंडाशय, वृक्क, आमाशय, अग्नाशय, छोटी आंत, हृदय भी अंतःस्रावी ग्रंथियों की तरह ही कार्य करते हैं।

सभी अंतःस्रावी ग्रंथियाँ हार्मोनों का स्रवन करती हैं। ये हार्मोन विभिन्न उपापचयी (Metabolic) क्रियाओं को उत्प्रेरित व नियन्त्रित करते हैं जैसे शारीरिक वृद्धि, हृदय की धड़कन, गौण लैंगिक लक्षण, विभिन्न भावनाएं - आवेश, भय, उत्साह आदि। रक्त में इनकी मात्रा अंतःस्रावी ग्रंथियों से निकलने वाले कारकों की क्रिया भी नियन्त्रित करती है। अंतःस्रावी ग्रंथियों से निकलने वाले हार्मोन ज्यादातर प्रोटीन होते हैं पर कुछ ग्रंथियां जैसे अधिवृक्क व वृषण स्टेरोयड का स्रावण भी करती हैं।

पीयूष ग्रंथि (Pituitary gland) : यह अंडाकार, रक्ताभ धूसर रचना होती है। यह अग्र पाली व पश्च पाली में विभाजित होती है। दोनों पालियों का संबंध मस्तिष्क में स्थित हाइपोथैलेमस से होता है। अग्र पाली रक्त वाहिनियों द्वारा व पश्च पाली तंत्रिका द्वारा जुड़ी रहती है। अग्र पाली को एडिनोहाइपोफायसिस व पश्च पाली का

न्यूरोहाइपोफायसिस भी कहते हैं।

एडिनोहाइपोफायसिस द्वारा स्रावित हार्मोन

1. **सामेटोट्रोपिन अथवा वृद्धि हार्मोन** - यह शरीर की वृद्धि को नियन्त्रित करता है। कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन तथा वसा के उपापचय का नियमन करता है। रक्ताणुओं की उत्पत्ति को प्रभावित करता है।

2. **पोलेक्टिन अथवा लेक्टोजेनिक अथवा लियुटियोट्रोपिक हार्मोन** - यह गर्भावस्था तथा दुग्ध स्रवण के समय स्रावित होता है।

3. **थायरोइड प्रेरक हार्मोन अथवा थायरोट्रोपिक हार्मोन** - यह थायराइड ग्रंथि की सामान्य वृद्धि तथा सक्रियता को प्रेरित एवं नियन्त्रित करता है।

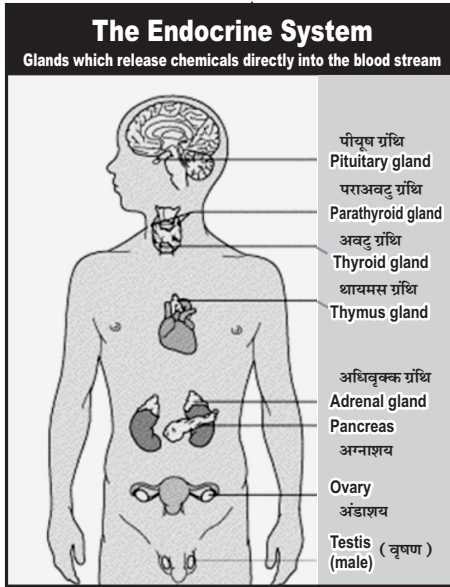
4. **एडिनोकोरकोट्रोपिक हार्मोन** - यह वसा के अपघटनी एंजाइम को सक्रिय करता है। मेलेनिन संश्लेषण को उत्तेजित करता है।

5. **गोनाडोट्रोपिक हार्मोन** - ये दो प्रकार के होते हैं-

(अ) **लुटिनाइजिंग हार्मोन अथवा अंतराली कोशिका प्रेरक हार्मोन** - यह स्त्री में एस्ट्रोजन व प्रोजेस्ट्रॉन नामक हार्मोन को तथा नर जनन हार्मोन टेस्टोस्ट्रॉन को स्रवण के लिए प्रेरित करता है।

(ब) **पुटको उद्दीपक हार्मोन** - यह हार्मोन मादा में अंडाशय की फॉलिकल की वृद्धि एवं नर में शुक्राणुओं के निर्माण की प्रक्रिया को नियन्त्रित करता है।

6. **मेलेनोसाइट उद्दीपक हार्मोन** - यह हार्मोन एडिनोहाइपोफायसिस के पार्स इंटरमिडिया द्वारा स्रावित होता है। यह हमारे शरीर की त्वचा में उपस्थित मेलानोफोर (रंजक) को उत्तेजित करता है।



सम्पादन-संकलन प्रो. एन. एल. गुप्ता, श्री प्रकाश तातेड़, डॉ. के.एल. मेनारिया, डॉ. एल.एल. धाकड़, डॉ. के. एल. तोतावत

विज्ञान समिति, रोड़ नं. 17, अशोकनगर, उदयपुर - 313 001 दूरभाष : 0294-2413117, 2411650

Website : www.vigyansamitiudaipur.org, E-mail : samitivigyan@gmail.com



न्यूरोहाइपोफायसिस द्वारा स्रावित हार्मोन :- वास्तव में यहां से कोई हार्मोन नहीं बनता। हाईपोथेलेमस में बनने वाले दो हार्मोन यहां संग्रहित होते हैं व निर्मुक्त किये जाते हैं।

1. आक्सीटोनिन- यह मूत्राशय, पित्ताशय, आंत्र की आदि पेशियों को प्रभावित करता है। यह स्तन ग्रन्थियों से दुग्ध निष्कासन को भी नियन्त्रित करता है। यह शिशु को गर्भाशय से बाहर निकलने में सहायक होता है।

2. वेसोप्रेसिन - यह मूत्र में जल की मात्रा को नियन्त्रित करता है। इसकी कमी से मूत्र में जल की वृद्धि हो जाती है। इस रोग को डायबिटिस इन्सिपिडस कहते हैं। यह रक्त दाब को भी नियन्त्रित करता है।

पीयूष ग्रंथि के अप सामान्य कार्य :

अ. अधोपीयूषता अथवा हायपोपिट्युटरिज्म : शिशुओं में पीयूष ग्रंथि के हार्मोन का स्रवण कम होने पर बौनापन नामक रोग हो जाता है। वयस्क में कमी होने पर तथा विशेष थाइराइड हार्मोन की कमी से मिक्सोडिमा रोग हो जाता है। इस ग्रंथि का ट्युमर होने पर सिमण्ड्स रोग हो जाता है।

ब. अतिपीयूषता अथवा हाइपरपिट्युटरिज्म : एड्रिनोकोरकोट्रोपिक हार्मोन की अधिक मात्रा से कुशीन्ग का रोग होता है। थायरोइड प्रेरक हार्मोन अथवा थायरोट्रोपिक हार्मोन के अधिक होने पर गिगेन्टिज्म रोग होता है। सामेटोट्रोपिन अथवा वृद्धि हार्मोन की अधिकता के कारण एक्रोमिगली रोग होता है।

अवटु ग्रंथि या थाइराइड ग्रंथि : यह द्विपालिक ग्रंथि होती है। जो गले में श्वास नली के दोनों ओर स्थित रहती है। दोनों हिस्से एक पट्टी जिसे इस्थमस कहते हैं से जुड़ी रहती है। मादा में नर की तुलना में यह बड़ी होती है। केंडल ने अवटु ग्रंथि से एक रवादार पदार्थ पृथक किया इसे थायराक्सिन का नाम दिया गया। थायराक्सिन बनाने के लिए आयोडिन डाइआयोडोटायरोसिन के दो अणु मिलकर टेट्राआयोडोटायरोसिन या थायरोक्सिन बनाते हैं। मानव में प्रतिदिन लगभग 200 थायराक्सिन का संश्लेषण होता है।

इसी प्रकार अवटु ग्रंथि के पुटकों की बाहरी कोशिकाओं द्वारा कैल्सिटोनिन नामक हार्मोन बनता है। यह हार्मोन रक्त में कैल्शियम फॉस्फेट के स्तर को बनाये रखने में सहायक होता है।

थायराइड हार्मोन के कार्य

ऊर्जा उत्पादन, ऑक्सीजन ग्रहण करने की क्षमता व आधारी उपापचय दर(BMR) को बढ़ाता है। यह आंत्र से ग्लूकोज

के अवशोषण को प्रेरित करता है तथा प्रोटीन, लिपिड व कैल्शियम के उपापचय को भी प्रभावित करता है।

यह नाइट्रोजन उत्सर्जन व मूत्र की मात्रा में वृद्धि करता है। यह हृदय संचरण तंत्र को प्रभावित करता है तथा स्तन में दूध की मात्रा में वसा की वृद्धि करता है।

अप सामान्य कार्य

हाइपोथायरोडिज्म -

शरीर में आयोडीन की कमी से ग्रंथि बढ़ जाती है। इसे घेंघा(गोइटर) कहते हैं। बच्चों में थायराइड हार्मोन की कमी से क्रेटिनिज्म नामक रोग हो जाता है इसके लक्षण अनियमित आकार की हड्डियां, बाहर निकली जिह्वा, बढ़ा हुआ उदर, झुर्रीदार मोटी व खुरदरी त्वचा व जनन अंगों व लक्षणों का कम विकसित होना है। इसकी कमी से बच्चों में जुवेनाइल मिक्सोडिमा नामक रोग हो जाता है। इसमें शरीर छोटा व बौना होता है। सिर अनुपात से अधिक बढ़ा होता है। त्वचा सूखी तथा बच्चा मानसिक रूप से शिथिल रहता है। आंखें मोटी व बाहर निकली रहती हैं। वयस्क में कमी से मोटापा होना बालों का गिरना, त्वचा का खुरदरी होना व मस्तिष्क का अविकसित रहना होता है। इसकी कमी से हृदय संकुचन दर कम हो जाती है तथा तंत्रिका तंत्र के कार्य में शिथिलता आ जाती है।

हाइपरथायरोडिज्म-

इसके अति उत्पादन से ग्रेव का रोग या बाह्य नेत्रिय गायटर होता है। इसमें ग्रंथि बड़ी, आधारी दर द्वारा ऊष्मा का उत्पादन, हृदय गति व रक्त चाप का ज्यादा होना, विवेकहीनता तथा नेत्रगोलकों का बाहर निकलना होता है।

पराअवटु ग्रंथि (Parathyroid gland)

मानव में अवटु ग्रंथि पर चार बहुत ही छोटी पराअवटु ग्रंथि होती है। यह पीले भूरे रंग की होती है। यह ग्रंथि केवल एक ही हॉर्मोन का संश्लेषण करती है जिसे पैराथारमोन कहते हैं। यह हॉर्मोन वृक्क नलिकाओं में पुनः अवशोषण की क्रिया में वृद्धि कर कैल्शियम, आयरन के अवशोषण में वृद्धि करता है। यह भोजन में उपस्थित कैल्शियम व फॉस्फेट के अवशोषण पर नियंत्रण रखता है। विटामिन डी इसकी इस क्रिया में मदद करता है। इसकी कमी से स्तन ग्रंथियों में कैल्शियम की कमी हो जाती है।

कुछ अन्य ग्रन्थियों के बारे में आगामी अंक में -

- प्रो. महीप भटनागर

अधिष्ठाता (से.नि.)

विज्ञान महाविद्यालय, मो.ला.सु. विश्वविद्यालय



लोकविज्ञान के
पिछले अंको से :
जुलाई अगस्त 1978

महान रसायन शास्त्री : प्रो. नील रतन धर

कहा जाता है विगत सौ वर्षों से इस देश में जितने महान् व्यक्ति पैदा हुए हैं उतने शायद ही कभी हुए हों। प्रोफेसर नील रतन धर भी इन्हीं महान् व्यक्तियों की श्रेणी में हैं। सरस्वती के वरद् पुत्र प्रोफेसर धर की वैज्ञानिक देन अद्भुत है। रसायन शास्त्र की अनेक शाखाओं में आपने क्रांतिकारी अनुसंधान किए हैं। उनके कई शोध प्रकाशित हुए बिना ही उच्च स्तर की पुस्तकों में उल्लेखित है। एक महान शिक्षक एवं देशभक्त के अतिरिक्त आप दूसरों के महान् हितचिन्तक थे। आपका जीवन अत्यन्त सरल एवं सादा था।

प्रोफेसर नील रतन धर का जन्म 2 जनवरी 1892 ई. को जेसोर (बंगाल) में हुआ था। आपने महाविद्यालयीय शिक्षा रिपन कॉलेज कलकत्ता में राष्ट्रीय नेता सुरेन्द्र नाथ बनर्जी के तत्वावधान में आरम्भ की; 1911 ई. में आप बी.एस सी. ऑनर्स की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए तथा सन् 1913 में प्रेसीडेंसी कॉलेज कलकत्ता से आपने भौतिक-रसायन शास्त्र में एम.एस सी. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इस परीक्षा में आपने विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। एम.एस सी. का अध्ययन आपने आचार्य प्रफुलचन्द्र राय, जगदीशचन्द्र बोस व जे.बी. भदूरीक तथा सी.बी. भादूरीक जैसे महान वैज्ञानिकों के तत्वावधान में किया। इसके पश्चात् सन् 1915 ई. में राज्य विद्वेषक के रूप में उच्च अध्ययन हेतु आप विदेश पधारे। सन् 1917 ई. में लंदन विश्वविद्यालय ने आपको डॉक्टर ऑफ साइन्स की उपाधि से विभूषित किया व जनवरी 1919 में सरेबन पेरिस विश्वविद्यालय ने आपको डॉक्टर ऑफ साइन्स की उपाधि से विभूषित किया। इसी वर्ष आपका इंडियन एजुकेशन सर्विस (भारतीय शिक्षा सेवा) में चयन हो गया तथा आपको इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सेंट्रल कॉलेज में भौतिक एवं अकार्बनिक रसायन शास्त्र का प्रोफेसर नियुक्त किया गया।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान पेरिस विश्वविद्यालय के छात्र के रूप में आप लेवोजियर (1748-1794) के अनुसंधानों से अत्यधिक प्रभावित हुए। लेवोजियर ने 1781 में घोषणा की थी कि “जीवन एक रासायनिक प्रक्रिया है, यह भोज्य पदार्थों के आक्सीडेशन पर निर्भर होती है। आपने लेवोजियर और लुइ पास्चर के मूल शोध निबन्धों का अध्ययन किया व इन गवेषणाओं को आगे बढ़ाया। यही नहीं आपको मादाम क्यूरी (1867-1934), ली चेटलियर (1850-1939), जी अरबेन (1868-1940), प्रोफेसर फ्रिट्स हेबर जैसे महान वैज्ञानिकों की विज्ञान शालाओं में कार्य करने का और इनके व्याख्यान सुनने का अवसर मिला। प्रायोगिक परमाणु विघटन के अन्वेषक डॉ. ओटो हान के

निकट सम्पर्क में भी आप आए।

प्रोफेसर धर ने अपने जीवन के 50 श्रेष्ठ वर्ष इलाहाबाद में प्रोफेसर के रूप में व्यतीत किए। पहले आपने भारतीय शिक्षा सेवा के सदस्य के रूप में व बाद में विश्वविद्यालय में रसायन शास्त्र के प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। भारत वर्ष के अनेक विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों में आज प्रोफेसर धर के छात्र प्रोफेसर, रीडर एवं कृषि निदेशक के रूप में कार्य कर रहे हैं। आपके अनेक छात्र उच्चतम प्रशासनिक सेवाओं में कार्य कर रहे हैं।

प्रोफेसर धर के अनुसंधान कार्यों का महत्त्व इसी से आंका जा सकता है कि 1955 ई. में आपको फ्रेंच एग्रीकल्चर एकेडमी का अधिसदस्य (फेलो) मनोनीत किया गया व 1961 में आपको फ्रेंच एकेडमी ऑफ साइन्सेज का अधिसदस्य मनोनीत किया गया। लन्दन की रॉयल सोसायटी के 600 से अधिक सदस्य हैं। जबकि फ्रेंच एकेडमी ऑफ साइन्सेज 113 सदस्य ही हैं। प्रोफेसर धर ने इलाहाबाद को एक महत्त्वपूर्ण गवेषणा केन्द्र बना दिया गया, यहां रसायन शास्त्र और मृदा रसायन शास्त्र के अनेक महत्त्वपूर्ण अंगों पर अनुसंधान किए गए। प्रोफेसर धर ने विद्युत रसायन, उत्प्रेरण (Catalysis) क्रिया, गति श्लेषाभीय रसायन, भू रसायन प्रक्रियाओं, मृदा क्रियाओं पर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अनुसंधान किए हैं। ये अनुसंधान प्रोफेसर धर ने 500 शोध निबन्धों में प्रकाशित किए हैं। आपके तत्वावधान में कार्य करके लगभग 200 छात्रों ने डॉक्टरेट की उपाधि ग्रहण की है। प्रोफेसर धर ने अनेक महत्त्वपूर्ण अनुसंधानों में नाइट्रोजन के स्थिरीकरण में प्रकाश का प्रभाव, भूमि में नाइट्रोजन हानि नाइट्रोजन और फॉस्फेट की मात्रा संबंध आदि अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अनुसंधान है। प्रोफेसर धर ने प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध किया है कि मृदा से नाइट्रोजन के स्थिरीकरण में फॉस्फेट प्रगारीय(कार्बनिक) पदार्थों के ऑक्सीकरण में महत्त्वपूर्ण योग प्रदान करता है। कृषि के क्षेत्र में इन अनुसंधानों का बड़ा आर्थिक योगदान रहा है।

प्रोफेसर धर और इनके सहयोगियों के अनुसार सभी प्रकार के कैल्शियम फॉस्फेट अल्जीरीया फ्लोरिडा और बिहार व त्रिचनापल्ली के रॉक फॉस्फेट को जब प्रांगारिक (organic manure) खादों के साथ मृदा में मिलाया जाता है तो नाइट्रोजन के स्थिरीकरण में ये बहुत वृद्धि करते हैं। इस प्रकार हम एक एकड़ भूमि में 100 किलोग्राम नाइट्रोजन मिला सकते हैं। फॉस्फेट को भूमि में मिलाने से केवल नाइट्रोजन स्थिरीकरण में ही सहायता नहीं मिलती अपितु फसलों के लिए आवश्यक



सावधान ! इन्टरनेट भी एक नशा है।

फॉस्फोरस, चूना, मैग्नीसीया व सूक्ष्म मात्रिक तत्व भी फसलों को उपलब्ध हो जाते हैं।

प्रोफेसर धर की गवेषणाओं की सत्यता की परीक्षा उपासला के रॉयल कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर ने की तथा उन्होंने देखा कि कैल्शियम फॉस्फेट की उपस्थिति में यदि प्रांगारिक खाद दिया जाए तो 25 प्रतिशत पैदावार बढ़ जाती है।

संसार में इस्पात उद्योग की वृद्धि के साथ साथ इन उद्योगों से एक गौण उत्पादन बेसिक स्लेग उत्पन्न होता है। इस स्लेग में 4-20%(P₂O₅) फॉस्फोरस पेंटा ऑक्साइड, चूना, मैग्नीसीया, पोटेश व सूक्ष्म तत्व होते हैं। गत 60 वर्षों से यूरोप में इस गौण उत्पादन को फॉस्फेटिक उर्वरक के रूप में काम में लाया जा रहा है किन्तु भारतीय इस्पात फैक्ट्रियों से उत्पादित बेसिक स्लेब का जिसमें 4-8 प्रतिशत फॉस्फोरस पेंटा ऑक्साइड होता है अभी तक काम में नहीं लाई जा रही है। प्रोफेसर धर व शीला धर इन्टीट्यूट के 50 अनुसंधानकर्ताओं ने इस बेसिक स्लेग का प्रांगारिक खादों के साथ उपयोग किया है और इन्होंने इसे उपयोगी पाया है। यह एक महत्वपूर्ण सुझाव है तथा इसका जमीन की उर्वरता बढ़ाने में उपयोग किया जा सकता है।

प्रोफेसर धर एक महान लेखक भी थे। आपने बंगला और आंग्ल भाषा में अनेक पुस्तकें लिखी हैं : प्रकाश के रासायनिक प्रभाव (Chemical action of light) जीव रसायन के नए संबोध व प्रकाश का प्रभाव (1) आमादेर खाद्य (2) जमीन उर्वरता वृद्धि आदि कुछ मुख्य हैं।

प्रोफेसर धर की बहुमुखी प्रतिभा का बखान करना कोई सरल कार्य नहीं है। आपको अनेक बार केम्ब्रिज एडिंगबर्ग, लन्दन, पेरिस, गोटिनजन, वागेनीन जन विस्कोनसिन विश्वविद्यालयों में व रोदमस्टड एक्सपेरीमेंट स्टेशन पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया। आप रसायन शास्त्र में नोबल पुरस्कार प्रदान करने वाली स्वेडिश कमेटी के सदस्य रहे हैं। आप इंडियन साइंस कांग्रेस के भी अध्यक्ष रह चुके हैं।

प्रोफेसर धर का जीवन अत्यन्त सादा था। आपकी पतलून और कोट के पैबन्द लगे हुए मिलना इनके परिचितों के लिए अचरज की वस्तु नहीं है। आपने जीवन की प्रायः सारी आय लगभग दस लाख रुपया शैक्षणिक व अनुसंधान कार्यों के लिए दे दी है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अंतर्गत 'शीलाधर इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस साइंस भी इन्हीं की देन है जो उनकी स्वर्गवासी पत्नी की चिर यादगार का चिन्ह है।

सभी लेखकों एवं पाठकों से अनुरोध है कि लोकविज्ञान में प्रकाशनार्थ नवीन विषयों पर मौलिक सामग्री भेजें।

नशा, किसी चीज की लत ये आज कोई नई समस्या नहीं, इससे पूर्व शराब, भांग आदि नशे प्रचलन में थे परंतु इंटरनेट की लत वर्तमान में एक खतरनाक रूप ले चुकी है। जब हम लगातार कई घंटों तक मोबाइल या कम्प्यूटर पर आंख गड़ाए रहेंगे तो इससे दूसरे काम तो प्रभावित होंगे ही, शरीर पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा। एक सर्वेक्षण के अनुसार इंटरनेट का अधिक इस्तेमाल करने से लत, अवसाद, चिंता, मोटापा और सामाजिक अलगाव जैसी प्रवृत्तियां बढ़ रही हैं।

एक आंकड़े के अनुसार भारत में लगभग 97.8 करोड़ लोग मोबाइल का प्रयोग करते हैं जबकि 14 करोड़ लोग स्मार्ट फोन का प्रयोग करते हैं। 24.3 करोड़ लोग इंटरनेट का प्रयोग करते हैं वहीं 11.8 करोड़ लोग सोशल मीडिया पर अपनी पहुंच बनाए हुए हैं। मोबाइल व स्मार्टफोन ने जहां दुनिया को अपनी मुट्ठी में किया है वहीं यह आज के युवाओं को भटकाव की ओर ले जा रहा है। आपको ट्रेन, बस या रेस्तरां में कई लोग मिल जाएंगे जो कि लगातार अपने स्मार्टफोन से चिपके रहते हैं। ऐसे लोगों को बाहरी दुनिया की कोई खबर नहीं रहती। यात्रा में समय व्यतीत करने के लिए वीडियो गेम आदि का लोग जमकर उपयोग करते हैं। इधर स्मार्टफोन से सेल्फी खींचने का नया दौर चल पड़ा है। कई लोगों ने सेल्फी के चक्कर में अपनी जान गंवा दी, यह खबर भी समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई है।

आज के युवा तो स्कूटर या मोटर साइकिल चलाते वक्त कान पर मोबाइल दबाकर बात करने में गर्व महसूस करते हैं। गाड़ी चलाते समय फोन का उपयोग या मैसेज करना भी आम बात हो गई है। भोजन एवं शौचालय के समय भी अब लोग इसे नहीं छोड़ पा रहे हैं। मोबाइल एवं स्मार्ट फोन ने जहां सारी दुनिया को अपनी मुट्ठी में किया है वहीं अपने घर, परिवार एवं रिश्तेदारों से दूरी बनाई है।

व्हाट्सअप व फेसबुक पर देश-विदेश के लोगों को मित्र बनाने वाले अपनों से दूर होते जा रहे हैं। घर आए मेहमान से बात करने के लिए भी अब लोगों के पास समय नहीं रह गया है। आखिर कितनी असंवेदनशील हो गई है दुनिया। फेस बुक पर फोटो को लाइक करने वालों की संख्या जब सैकड़ों में होती है तो उन्हें लगता है कि सारी दुनिया में उन्हीं का परचम लहरा रहा है वे इंटरनेशनल स्तर पर छा गए हैं। इंटरनेट के आदी लोग अपने काम पर ध्यान लगाने के बजाय इंटरनेट के आदी हो गए हैं। यों कहें कि वे इंटरनेट के नशेड़ी हो गए हैं। मोबाइल या कम्प्यूटर पर घंटों गेम खेलना भी इस श्रेणी में आता है।

स्रोत - ज्ञान विज्ञान बुलेटिन